"मोमन दिल अर्श किया"

श्रीमती कंचन आहूजा, जयपुर

हम वाणी में बार बार पढ़ तो जाते हैं कि मोमन दिल अर्श किया परन्तु इस चरण की कभी लज्जत नहीं ली कि इस एक चरण में श्री राजजी का कितना इश्क और कितनी मेहर भरी है और कभी विचार नहीं किया कि हमारे धनी अक्षरातीत जो आज तक कभी इस दुनिया में नहीं आये, जबकि ब्रह्माण्ड तो हजारों वर्षों से चल रहा था देवी-देवता और त्रैगुण जिसकी खोज करते रहे और हजारों वर्षों तक तपस्या करके भी उस पूर्ण ब्रह्म और उसके धाम के बारे में नही जान सके तो क्या कारण है कि वो पूर्णब्रह्म अक्षरातीत इस जगत में आये। वो क्यों आए और आकर मोमन के दिल को अर्श बनाया तो क्यों बनाया। अगर श्री राजजी थोड़ी सी मेहर करें तो ये बात अवश्य समझ में आती है कि बेशक श्री राजजी इस नाबूद दुनिया में आये और आकर मोमन के दिल को अर्श बनाया क्योंकि उनकी ब्रह्मप्रिया इस नाबूद दुनिया के खेल देखने के लिए आयी और आकर भूल गयी तो उन रूहों की खातिर स्वयं अक्षरातीत इस फानी दुनिया में आये और रूहों को माया से निकालने के लिए मोमन के दिल को अर्श बनाया। जैसा कि वाणी में लिखा है–

"ऊपर तले न अर्श कहया,
अर्श कहया मोमनकलूब ।
ए जाने अरवाहें अर्श की,
जिनका हक महबूब ।।

जब श्री राजजी ने दिल को अर्श बनाया तो हमें क्या-क्या दिया। सर्वप्रथम तो हकीकत का ज्ञान मैं कौन ? मेरा घर कैसा है ? मेरे धनी कौन हैं ? इसकी हमें सुध दी, इसके साथ-साथ परमधाम की मुझ खिलवत की बातों की हमें यहां बैठे सुध दी, परमधाम की आठ पहर की लीला और दशो भोम के सुखों का अनुभव हमें यहाँ बैठे करवाया, और फिर परमधाम की एक दिली की समझ आने लगी। परमधाम में श्री राजजी श्यामा जी और रूहें सब एक हैं जो बात राजजी के दिल में आती वही बात श्यामा जी के और फिर रूहों के दिल में आती है : एक का सुख सब का सुख है जैसा कि वाणी में लिखा है–

एक रूह बात करे हकसों, सुख दूजी को होए।
जो देखिये मुख बोलते, तो रूह सुख पावे दोय ।।

जब सब बातों की समझ आयी तो यह विचार आता है कि अवश्य श्री राजजी से हमारा सम्बन्ध है जिसके कारण परमधाम की वो न्यामते हमें यहाँ बैठे मिली। जब श्री राजजी से सम्बन्ध जुड़ जाता है तो परमधाम के सब सुख यहीं बैठे अनुभव किये जा सकते हैं जैसा कि वाणी में लिखा है–

Nijanand App

सुख जो हक अर्श के, जिनको नहीं शुमार।
सो देखन की ठौर इत है जो रूह सो करो विचार॥

सम्पूर्ण वाणी श्री राजजी के इश्क और मेहर से भरी है धनी तो हम पर मेहर पर मेहर किए जा रहे हैं और हम अवगुण पर अवगुण किये जा रहे हैं। वो हमें अपना बनाना चाहते हैं पर हम उनसे दूर रहना चाहते हैं वाणी में श्री राजजी लिखते हैं–

रूहो मैं रे तुम्हारा आशिक,
सदा सुख तुम्हे चाहूँ ।
वास्ते तुम्हारे कै विध-विध के,
इश्क अंग उपजाऊँ ॥

इसके अतिरिक्त

मैं माशूक तुम आशिक, मैं आशिक तुम माशूक मैं पुकारया माहे खलक,। वो तो दुनिया में पुकार कर कह रहे है रूहो मैं तुम्हारा आशिक हूँ और मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता, और हम हैं कि उन्हें अपना बनाना ही नहीं चाहते। हम उनसे सम्बन्ध जोड़ने से डरते हैं और यही सोचते रहते हैं कि हम तो धनी के हो ही नहीं सकते। यद्यपि यह सच है कि हम अवगुणों से भरे है और हम उनके आशिक बनने के काबिल ही नहीं, पर जब श्री राजजी मेहर करें तो यह बात समझने में आती है के बेशक हम अवगुणों से भरे हैं पर वो तो मेहर के सागर हैं उनकी इतनी मेहर होते हुए भी हम इतने पीछें क्यों रह जाते हैं क्योंकि हम उनकी आराधना और पूजा तो करते हैं परन्तु उन्हें अपना नहीं समझते। श्री राजजी की कृपा हो जाए और जब ये भाव दिल में आ जाए कि मैं तो राजजी की हूँ तो रूहों के कौल फैल हाल स्वतः ही बदलने लगते हैं पिया का दर्द ऊसे दुनिया से छुड़ाकर अपने चरणों में लगाता है और फिर वो दुनिया में भी रहे तो भी रूह अपनी चाल नहीं छोड़ती।

रूहें आइया बीचदुनि के धरे नासुती वजूद।
रूहें चाल न छोड़े अपनी, जो कदी आइया बीच नाबूद॥

श्री राजजी ने रूहों को खेल दिखाने दुनियाँ में भेजा और श्री राजजी ने देखा कि रूहें माया में जाकर लिप्त हो गयी हैं तो उन्हे माया से निकालकर श्री राजजी के चरणों में पहुँचाते हैं, वे उन्हें दुनिया में रखते हुए भी दुनिया से न्यारे रखते हैं।

दुनी में बैठाय न्यारी दुनि से,
किए ऐसी जुगत बनाए ।
सुख दिए दोनों ठौर के,
अर्श बीच दुनी बैठाए ॥

एक तरफ श्री राजजी ने इतनी मेहर की तो दूसरी तरफ हमें आजमाने के लिए हमारे साथ माया भी लगा दी। जो हमें धनी से जुदा करते हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार माया के ये सारे रूप हमें दुनिया में लगाकर राजजी से दूर ले जाते हैं परन्तु श्री राजजी की मेहर हर पल साथ होने के कारण श्री राजजी ने माया के इन रूपों से बचने का तरीका भी बताया कि माया के रूप सारे हमारे काम के हो सकते हैं यदि हम उनका रूख माया के रूप से हटाकर धनी के तरफ लगा देवें तो यही काम, क्रोध, लोभ, मोह दुनिया से हटाकर धनी के लिए लगावें तो ये जल्दी ही हमारे धनी से मिलन में सहायक बन सकेंगें। अहंकार

Nijanand App

जिसे खुदी भी कहा गया है इसमें खुदी को मिटा दिया जाए। मैं कुछ नहीं जो कुछ है सब धनी का है मैं धनी की हूँ यह धनी वाली मैं आ जाए तो अवश्य ही श्री राजजी महाराज हमारे सिर पर, एक पाँव पर खड़े हैं और वो रूहों को दुःखी नहीं देख सकते हमारा दुख उनका दुःख हैं

वो दुःख मेरी सैंयों को, तब सुख कैसा मोहे।
हम तुम एक वतन के, अपनी रूह नहीं दोय॥

यहां तक भी लिखा है कि "मुख कुरमाने मैं न सह सकूं" परन्तु हमें उनके ऊपर यकीन व विश्वास की कमी है श्री राजजी जिस तरह से हमारे साथ हैं हम समझ नहीं पाते जैसे–

जैसे हक खड़े हैं सिर पर तहकीक जानत नाहीं।
विसर जात हैं नींद में, दृढ़ होत न ख्वाब के माँहि॥

यदि हमारा विश्वास पक्का हो कि श्री राज जी हमारे साथ हैं और हमारे लिए ही ये वाणी लाये हैं परमधाम की सब न्यामते हमारे लिए ही हैं तो फिर रूह की एक ही चाहत होनी चाहिए-

(१) करना दीदार हक का एही मोमनो ताम
पानी पीवना दोस्ती हक की, इन्हें एही सुख आराम

(२) खाते, पीते उठते बैठते सुपन सोवत जाग्रत
दम न छोड़े माशूक को, जाकी असल हक निसबत॥

भजन

श्रीमती पुष्पा गिरधर

तर्ज–संसार है इक नदिया

अज शुभ दिन आया हैं प्रकटे श्री नन्दकुमार
गोकुल की गलियों में छाई है अजब बहार

ब्रह्म सृष्टि के प्रीतम ने क्या खेल रचाया है
अपनी अंगनाओं को वह साथ ले आया है–२
अम्बर भी नाच उठा, धरती ने किया शृंगार–गोकुल की···

सोने के पलनों में झूले मेरा नन्दलाला
घर-घर ओछव छाया, सब झूमें वृजबाला–२
यह प्यार अलौकिक है, जाने न यह संसार–गोकुल की···

मनहर मन मोहन ने, कई रूप बनाये हैं
कहीं माखन चोर बने, कहीं चीर चुराये है–२
देखो नटवर छलिया की–लीला है अपरमपार गोकुल···

थी शरद पूरन प्यारी जब सुन्दर रास रची
इक मोहन इक गोपी क्या जोड़ी खूब सजी–२
नन्द गोप सभी हरषे–हरषे हैं सब ब्रज नार
गोकुल की गलियों में छाई है अजब बहार

Nijanand App